आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2410 • उदयपुर, शुक्रवार 30 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

### एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दु:खी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

### अनाथ 6 भाई–बहन की मदद को पहुंची नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से माता–पिता की दुर्घटना में मौत से अनाथ हुए 6 बच्चों तक बड़गांव तहसील के कालबेलिया कच्ची बस्ती में राशन और मदद लेकर पहुंची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि पीड़ित मानवता कि सेवा में सदैव तत्पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने 6 अनाथ भाई–बहनों की विभिन्न साइज के कपड़े और मासिक खाद्य सामग्री जिसमें आटा, चावल, दाल, शक्कर, तेल, मसाले आदि थे, भेंट किए गए। साथ ही बच्चों एवं पड़ोसियों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में भोजन, राशन, वस्त्रादि की हरसंभव मदद की जाएगी।

### 35 दिव्यांग भाई बहनों को सुनेल शिविर में मिले कृत्रिम अंग

पंचायत समिति सुनेल के सभागार में शुक्रवार को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर एवं पूर्व सरपंच घनश्याम जी पाटीदार परिवार के तत्वावधान में दिव्यांग कृत्रिम अंग शिविर आयोजित किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि पंचायत समिति प्रधान सीता कुमारी जी एवं पूर्व प्रधान कन्हैया लाल जी पाटीदार रहे। शिविर की अध्यक्षता घनश्याम जी पाटीदार पूर्व सरपंच द्वारा की गई एवं विशिष्ट अतिथि जनपद ललित कुमार जी, कालु लाल जी जनपद, प्रकाश जी, रघुवीर सिंह जी शक्तावत पूर्व सरपंच, संदीप जी व्यास, पूर्व सरपंच बद्रीलाल जी भंडारी रहे।

शिविर में अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संस्थान उदयपुर की जानकारी व कार्यक्रम का संचालन फील्ड प्रभारी मुकेश कुमार जी शर्मा ने किया। शिविर में अतिथियों का स्वागत मेवाड़ की पगड़ी व उपरणा पहनाकर शिविर प्रभारी हरी प्रसाद जी लढ्ढा द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि प्रधान सीता कुमारी जी ने बताया कि उदयपुर संस्थान में सेवक प्रशांत जी भैया अध्यक्ष एवं वंदना जी अग्रवाल द्वारा जो सेवा कार्य हो रहा वो सराहनीय कार्य है नर सेवा ही नारायण सेवा है, दिव्यांग भाई बहनों को आर्टीफिशियल हाथ व पैर लगने के बाद वो अपने पैर पर चलकर घर जाते देखा बहुत खुशी हुई, उनके चेहरे पर मुस्कान आ रही थी, यही सच्ची मानव सेवा है। उन्होंने कहा कि संस्थान उदयपुर में पलक जी अग्रवाल द्वारा गरीब राशन वितरण का कार्य किया जा रहा है, निःशुल्क दवाइयां, कपड़े, गरीब बच्चों की पढ़ाई का खर्च, सभी निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है। शिविर में 35 दिव्यांग भाई बहनों को .त्रिम अंग लगाए गए। शिविर में मुकेश जी शर्मा ने दानदाताओं से निवेदन किया कि अपनी साल भर की कमाई में से दसवां हिस्सा जरूर दान करना चाहिए और अच्छी सेवा के काम में धन रूपी लक्ष्मी का सदुपयोग करें। शिविर में शिविर प्रभारी हरी प्रसाद जी लढ्ढा, फील्ड प्रभारी मुकेश कुमार जी शर्मा, लोगर जी डांगी, डॉक्टर भंवर सिंह जी, मुन्ना भाई जी, अनिल जी पाटीदार, छोटू जी पाटीदार, गौरव जी का पूर्ण सहयोग रहा।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

# कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

**ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा–** अब तक नि:शुल्क 482 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

**'घर - घर भोजन' सेवा -** अब तक घर-घर नि:शुल्क 21,3051 भोजन पैकेट वितरित

## कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 1891 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

## बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 482 जन लाभान्वित

## संतुष्टि के भाव

11 वर्ष का शुभम्, गांव चिराउबेड़ा, जिला–सहारनपुर, उत्तरप्रदेश श्री शिवकुमार का पुत्र है। शुभम् जब 10 माह का था तभी बुखार में पोलियो हो गया। कई शहरों में दिखाया, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। एक रिश्तेदार ने –जो अपने बेटे का इलाज संस्थान में करवा चुके थे, उन्हें संस्थान के बारे में बताया। इस तरह संस्थान में पहुंचे। पांव की जांच के बाद शुभम् के पैर के तीन ऑपरेशन हुए। शुभम् शीघ्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा – श्री शिवकुमार इस सम्भावना से पूरी तरह सन्तुष्ट है।

## संस्थान द्वारा 101 राशन किट व छाते वितरित

श्रद्धा और आस्था के विशेष पर्व निर्जला एकादशी पर गत सोमवार को नारायण सेवा संस्थान ने गरीब, असहाय, विधवाओं और जरूरतमंदों को शर्बत पिलाकर, छाते और राशन सामग्री बांटी।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने कोरोना के चलते 50,000 मजदूर परिवारों को मदद पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। जिसके चलते निर्जला एकादशी पर 110 छाते और 101 रोजगार विहीन कामगारों को राशन दिया गया।

इस मौके पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल ने निर्जला एकादशी के महात्म्य पर प्रकाश डालते हुए गरीब बच्चों को नए वस्त्र, बिस्किट, फल व स्कूली बच्चों को स्टेशनरी व महिलाओं को साड़ियों का वितरण किया। शिविर के संयोजक दल्लाराम जी पटेल थे।

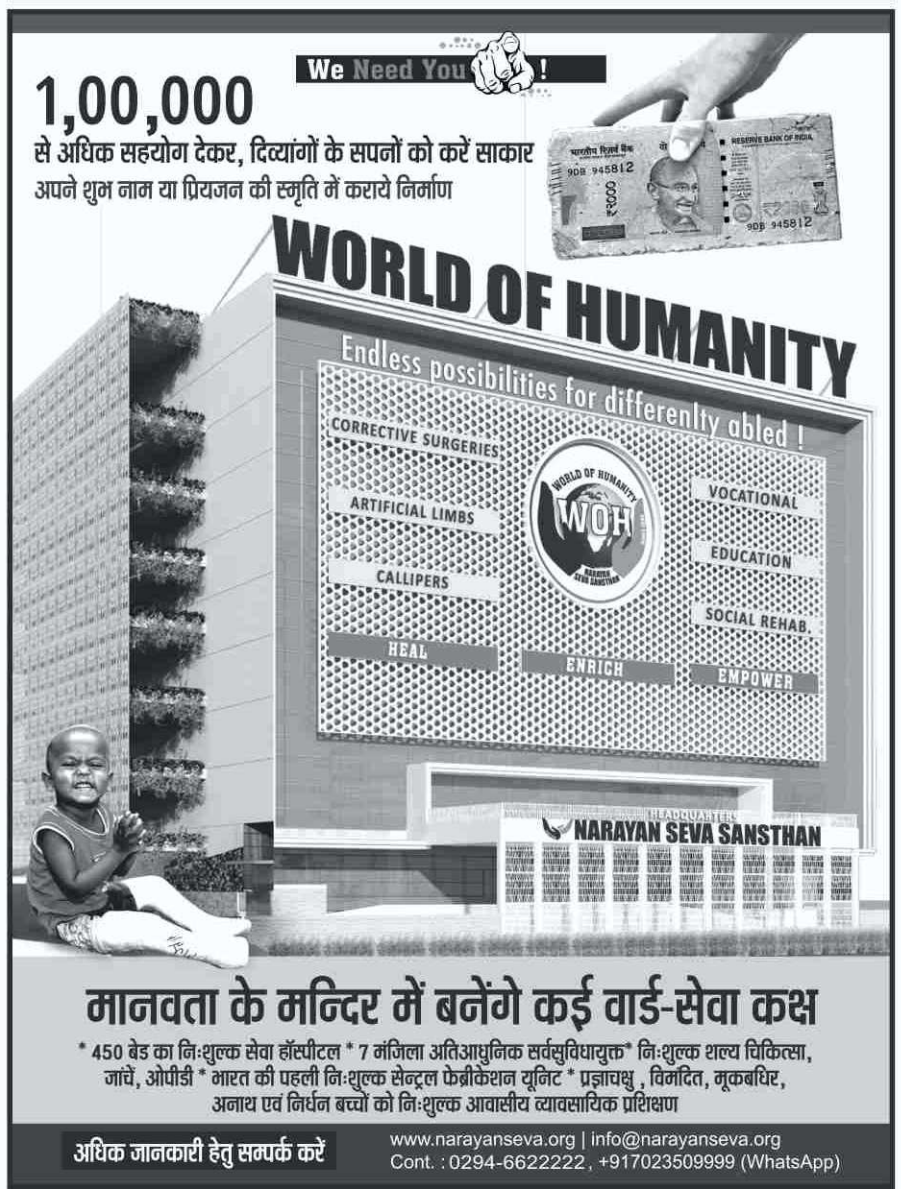

## सम्पादकीय

प्रकाश पराधीनता से मुक्ति का सहज उपाय है। प्रकाश को अनुभवियों ने अनेक अर्थों में उपयोग किया है। लेकिन प्रकाश का एक ही संदर्भ है और वह है सकारात्मकता।

चाहे अंधकार को विलीन करता प्रकाश हो, अज्ञान को लीलता ज्ञान का प्रकाश हो, चाहे अनीति पर विजय प्राप्त करता नीति का प्रकाश हो, सब सकारात्मक ही है। प्रकाश उस माध्यम का प्रतीक है जिसकी उपस्थिति में नकारात्मकता, अंधकार और अज्ञान भाग खड़े होते हैं। प्रकाश के आते ही अनपेक्षित तत्व स्वयं विदा हो जाते हैं। हमें अंधकार से लड़ना नहीं वरन् प्रकाश का आह्वान करना है। प्रकाश की स्तुति सदा से होती रही है चाहे वह सूर्य की हो, अग्नि की हो या दीपक की। सारी सृष्टि का अस्तित्व प्रकाश के किसी न किसी रूप पर ही आश्रित है तो मनुष्य तो उस सृष्टि का एक बिन्दुमात्र है। उसे भी तो प्रकाश की परम आवश्यकता है। प्रकाश बाहरी भी अच्छा है तो भीतरी प्रकाश प्रकट हो जाये तो क्या बात है।

### कुछ काव्यमय

**है प्रकाश यदि बोध का,**
**तमस कहाँ टिक पाय।**
**सूरज उगता ज्ञान का,**
**नासमझी भग जाय।।**
**करें उजाला प्रेम का,**
**घृणा नष्ट हो जाय।**
**सुखमय यह संसार हो,**
**प्रीत यहाँ सरसाय।।**
**होय प्रकाशित हृदय तो,**
**बहे प्रेम रसधार।**
**कौन पराया फिर यहाँ,**
**अपना सब संसार।।**
**मन यदि रोशन हो सके,**
**मिटते राग विराग।**
**नजर उजाला ही रहे,**
**छुप जाये सब दाग।।**
**बाँट उजाला जगत में,**
**यह परमात्म प्रसाद।**
**भाईचारा बढ़ चले,**
**मिट कर सभी फसाद।।**

**- वरदीचन्द राव**

याद रखें
है सुरक्षा में सबकी भलाई
जो है जीवन की कमाई।

अपनों से अपनी बात

## हम तो निमित्त हैं

सृष्टिकर्त्ता ने एक दिन सोचा कि धरती पर जाकर कम से कम अपनी सृष्टि को तो देखा जाये। धरती पर पहुँचते ही सबसे पहले उनकी दृष्टि एक किसान की ओर गई। वह कुदाली लिये पहाड़ खोदने में लगा था। सृष्टिकर्त्ता प्रयत्न करने पर भी अपनी हँसी न रोक पाये। उस इतने बड़े कार्य में केवल एक व्यक्ति को लगा देख और भी आश्चर्य हुआ। वह किसान के पास गये, उन्होंने कारण जानना चाहा तो उसका सीधा उत्तर था।

महाराज! मेरे साथ कैसा अन्याय है? इस पर्वत को अन्यत्र स्थान ही नहीं मिला। बादल आते हैं, इससे टकराकर उस ओर वर्षा कर देते हैं और पर्वत के इस ओर मेरे खेत हैं वे सूखे ही रहते हैं। क्या तुम इस विशाल पर्वत को हरा सकोगे? क्यों नहीं ? मैं इसे हराकर ही मानूँगा, यह मेरा दृढ़ संकल्प है। सृष्टिकर्त्ता आगे बढ़ गये। उन्होंने सामने पर्वतराज को याचना करते देखा। वह हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा था विधाता, इस संसार में सिवाय आपके मेरी रक्षा कोई नहीं कर सकता। क्या तुम इतने कायर हो, जो कि किसान के परिश्रम से डर गये मेरे भयभीत होने के पीछे जो

करण है, क्या आपने अभी–अभी नहीं देखा कि किसान में कितना आत्म–विश्वास है, वह मुझे हटाकर ही मानेगा। अगर उसकी इच्छा इस जीवन में पूरी न हुई तो उसके छोड़े हुए काम को उसके पुत्र और पौत्र पूरा करेंगे और मुझे भूमिसात करके ही दम लेंगे। आत्म विश्वास असंभव लगने वाले कार्यों को भी संभव बना देता है, – पर्वतराज ने कहा।

आज मानवता कराह रही है – दानवता हँस रही है। समाज में दुःखों का अन्त नजर नहीं आ रहा है। और सूर्य की किरणें हर घर तक पहुँचने में पूर्ण समर्थ नहीं है पर वनांचल में दुःखों के अन्धकार का साम्राज्य आज भी मौजूद है। समाज में व्याप्त दुःखों का एक पहाड़ खड़ा है। आपश्री के सहयोग, वरदहस्त, संरक्षण से संस्थान भी उसी किसान की तरह दृढ़ संकल्प एवं आत्म विश्वास के साथ इस पहाड़ को गिराने में लगा है।

कार्य बहुत बाकी है अभी मंजिल का रास्ता मिला है, मंजिल अभी दूर है। हमारा विश्वास प्रबल है, कदम इसी दिशा में बढ़ रहे हैं, साथ एक सम्बल आपका पुरजोर मिल रहा है, तथापि आवश्यकता है अधिक हाथों की। हजारों मन से संकल्प उठने की। जी हाँ, साथ आपश्री का आशीर्वाद इसी प्रकार मिलता रहेगा, अगर समाज में फैली असमानता की खाई को जीवन पर्यन्त लगे रहने के बाद भी हम पूरा नहीं कर पायेंगे तो जो आज बालगृह में बच्चे शिक्षित हो रहे हैं, जो विधवाएँ स्वावलम्बी प्रशिक्षण ले रही हैं, जो विकलांग ऑपरेशन के बाद खड़े होकर चल रहे हैं वे इस कार्य को पूरा करेंगे। अगर इस हेतु पुनः जन्म भी लेने की आवश्यकता रही तो इसी कार्य हेतु जन्म दें, यही, प्रार्थना प्रभु से निरन्तर रहेगी।

प्रभु का कार्य है – प्रभु ही कर रहे हैं –हम सब हैं निमित्त मात्र।

**–कैलाश 'मानव'**

## सच्चा राजा

बंगाल में गुष्करा एक छोटा–सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरने वाले झटपट उतरने लगे और चढ़ने वाले दौड़–दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसका कर डिब्बे के दरवाजे पर तो कर ली थी; किन्तु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी।

कई लोग गठरी को लाँघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें; किन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों। गाड़ी छूटने का समय हो गया। बेचारी बुढ़िया इधर–उधर बड़ी व्याकुलता

से देखने लगी। उसकी आँखों से टप–टप आँसू गिरने लगे।

एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घंटी बज चुकी थी; किन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहाँ से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिये उन्हें आशीर्वाद दे रही थी – 'बेटा ! भगवान् तेरा भला करे।'

तुम जानते हो कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे ? वे थे कासिम बाजार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कोलकाता जा रहे थे। सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं है जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन–दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है ? ऐसे सच्चे राजा बनने का तुम में से सबको अधिकार है। तुम्हें इसके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

**– सेवक प्रशान्त भैया**

## एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश ने कार्यालय सम्बन्धी बात की शुरूआत ही यह कह कर की कि इस पोस्ट ऑफिस में जितना काम है उसे देखते हुए स्टाफ की बहुत कमी है। इतना सारा काम आप जैसा अकेला व्यक्ति निपटाता है यह बहुत बड़ी बात है। बन्दूकधारी पोस्ट मास्टर डांट फटकार की अपेक्षा कर इन्सपेक्टर को सबक सीखाने की ठानकर आया था, उसे इसी बात का क्रोध था कि इस इन्सपेक्टर की हिम्मत कैसे हो गई यहां आने की, कितने ही इन्स्पेक्टर आये और गये मगर यहां आने की आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई।

कैलाश की बातों का पोस्ट मास्टर पर जादुई असर हुआ। उसके तमाम तेवर ढीले पड़ गये और वह छुई मुई की तरह होकर बोला–पहली बार किसी अधिकारी ने मेरी मजबूरी को समझा है। सब शिकायतें करते रहते हैं, मगर मैं किस मुश्किल से काम करता हूं इसका एहसास आपने ही किया है। कैलाश अपनी सफलता पर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था, ऐसे व्यक्ति से निपटने का अन्य कोई तरीका भी नहीं था। जब पोस्ट मास्टर पूरी तरह उसके वश में हो गया तब कैलाश ने अपना तीर छोड़ा।

गांव में एक डाक बंगला था। कैलाश वहीं ठहरा था। पोस्ट मास्टर भी उसके साथ डाक बंगले आ गया था। दोनों देर रात इधर–उधर की बातें करते रहे। पोस्ट मास्टर का बात बात में ओम नमः शिवाय कहना खत्म ही नहीं हो रहा था। अचानक कैलाश ने कहा कि उसे ओम नमः शिवाय बोलने का कोई हक नहीं है।

यह बात सुन कर चौंक गया और पूछ बैठा –क्यूं ? कैलाश ने तब उसे कहा–क्यूंकि ओम नमः शिवाय तो शिव भक्त बोलते हैं, मगर आप तो शिव भक्त हो ही नहीं।

कैलाश की बात सुनकर वह भौंचक्का रह गया, आवेश में आकर बोल उठा आप ऐसा कैसे कह सकते हैं। कैलाश मन की मन मुदित होने लगा, संवाद उसी दिशा में अग्रसर हो रहा था जिधर वह ले जाना चाहता था। उसने जवाब दिया कि सच्चा शिव भक्त वही होता है जो दूसरों की मदद करे, दीन–दुखियों की चिन्ता करे, आपने तो बजाय इनकी मदद करने, इन्हें कष्ट पहुँचाया है, वेदना दी है। यह सुनकर उसका आवेश कम हुआ और जिज्ञासा बढ़ गई। वह पूछ बैठा– ऐसा आप कैसे कह सकते हैं?

**अंश - 73**

## सांस लेने का बेहतर तरीका है प्राणायाम

रोज सुबह प्राणायाम, अनुलोम– विलोम, शीर्षासन, मत्स्य आसन करने से शरीर से विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। इससे शरीर की पाचन प्रणाली सामान्य होकर रक्त का बहाव सही हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप त्वचा में खिंचाव आकर झुर्रियां हटती हैं। हम सुंदर और स्वस्थ दिखने लगते हैं। आतंरिक सौदंर्य के लिए यह उपयोगी है। सांस लेने वाली क्रियाओं व शरीर के विभिन्न आसनों से हार्मोंस संतुलित होते हैं। आधा घंटा सुबह व शाम सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, उत्थान आसन, कपाल भाती व सांसों की क्रिया करें।

बालों और त्वचा के सौंदर्य को बनाए रखने में प्राणायाम महत्वपूर्ण भमिका अदा करता है। प्राणायाम सही तरीके से सांस लेने का तरीका है। प्रतिदिन 10 मिनट तक प्राणायाम से मानव शरीर की प्राकृतिक क्लीजिंग हो जाती है। योग को जीवन में अपनाएं। यह फायदेमंद है।

**(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)**

## अब चेस्ट एक्स–रे से पलों में पता चलेगी कोरोना रिपोर्ट

अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के जरिए कोरोना वायरस का पता लगाया जा सकेगा। डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गिनाइजेशन(डीआरडीओ) के सेंटर फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड रोबोटिक्स ने 5सी नेटवर्क और एचसीजी एकेडमिक्स की मदद से एआइ एल्गोरिद्म 'एटमेन' तैयार किया है।

इसका उपयोग चेस्ट एक्स–रे स्क्रीनिंग के लिए किया जाता है। इससे फेफड़ो में सक्रमण का मूल्याकंन भी किया जाएगा। इसकी एक्यूरेसी रेट 96.73 प्रतिशत है। सीएआइआर के डायरेक्टर डॉ. यू. के. सिंह ने कहा कि इस डायग्नोस्टिक टूल को डेवलप करने का मुख्य उद्देश्य चिकित्सकों और फ्रंटलाइन वकर्स की मदद करना है। यह टूल कुछ पलों में रेडियोलॉजिकल फाइडिंस को ऑटोमेटकली डिटेक्ट कर कोविड–19 का पता लगाएगा। इससे इमरजेंसी केस में चिकित्सकों को मदद मिलेगी। इसे लगभग देश के 1000 अस्पतालों में इस्तेमाल किया जाएगा।

## अनुभव अमृतम्

मैं विधवा हो जाउंगी तो क्या होगा? बच्चों का क्या होगा? प्रेम–स्नेह बढ़ाया,माताजी आप बिस्कुट जीमिये, चाय लीजिये।, मैंने बोला कि पास वाले वार्ड में राम–राम कर के आते हैं। उनका विश्वास बढ़ा। चलो चलते है पास वाले वार्ड में गये। एक पलंग पे ऐसा रोगी लेटा हुआ था। 18–20 साल का लड़का जिसको रात के अंधियारे में कुछ गांव वाले गेट पर छोड़ कर चले गये थे। सिरोही हॉस्पीटल के गेट पर वहाँ तड़प रहा था। मेरी दृष्टि पड़ी उसके पैर काले–काले जैसे हो रहे थे। कभी होश में आवे, कभी बेहोश हो जाता। हाथ की अंगुलियाँ भी काली–काली पड़ गई थी, तुरन्त स्ट्रेचर पर लेकर आया। डॉ. खत्रीसाहब को बताया इसको कोई हॉस्पीटल के गेट पर छोड़ के चला गया। अच्छा अच्छा भर्ती करते हैं, डॉक्टर साहब बड़े सहृदय। उन्होंने कहा कि– कैलाशजी इसको बिजली का करंट लग गया है। न मालूम कैसे करंट लग गया है। करंट से इसके हाथ और पैर काले पड़ गये हैं। दोनों हाथ कोहनी तक काटने पड़ेंगे। जंघा के पास से पैर भी काटने पड़ेंगे। यदि नहीं काटेंगे तो ये मर जायेगा दो–चार घण्टे में। गेंगरीन पूरे शरीर में फैल जायेगा। बोलो जल्दी बोलो। कैलाशजी आप ही गेट से यहाँ तक लाये होंगे। जल्दी बोलो– हाँ, कैलाशजी। हाँ, मेरा भतीजा है डॉक्टर साहब।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 200 (कैलाश 'मानव')


## दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

**कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..**

**जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि**

| ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि | ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि |
|---|---|---|---|
| 501 ऑपरेशन के लिए | 17,00,000 | 40 ऑपरेशन के लिए | 1,51,000 |
| 401 ऑपरेशन के लिए | 14,01,000 | 13 ऑपरेशन के लिए | 52,500 |
| 301 ऑपरेशन के लिए | 10,51,000 | 5 ऑपरेशन के लिए | 21,000 |
| 201 ऑपरेशन के लिए | 07,11,000 | 3 ऑपरेशन के लिए | 13,000 |
| 101 ऑपरेशन के लिए | 03,61,000 | 1 ऑपरेशन के लिए | 5000 |

**निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला**

**आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति**

**( वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें )**

| | |
|---|---|
| नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि | 37000/- |
| दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि | 30000/- |
| एक समय के भोजन की सहयोग राशि | 15000/- |
| नाश्ता सहयोग राशि | 7000/- |

**दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार**

| वस्तु | सहयोग राशि (एक नग) | सहयोग राशि (तीन नग) | सहयोग राशि (पाँच नग) | सहयोग राशि (ग्यारह नग) |
|---|---|---|---|---|
| तिपहिया साईकिल | 5000 | 15,000 | 25,000 | 55,000 |
| व्हील चेयर | 4000 | 12,000 | 20,000 | 44,000 |
| केलीपर | 2000 | 6,000 | 10,000 | 22,000 |
| वैशाखी | 500 | 1,500 | 2,500 | 5,500 |
| कृत्रिम हाथ/पैर | 5100 | 15,300 | 25,500 | 56,100 |

**गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर**

**मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि**

| | |
|---|---|
| 1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500 | 3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500 |
| 5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500 | 10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000 |
| 20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000 | 30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000 |

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

**अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान**

**आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।**

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

| Bank Name | Branch Address | RTGS/NEFT Code | Account |
|---|---|---|---|
| State Bank of India | H.M.Sector-4 | SBIN0011406 | 31505501196 |
| ICICI Bank | Madhuban | ICIC0000045 | 004501000829 |
| Punjab National Bank | KalajiGoraji | PUNB0297300 | 2973000100029801 |
| Union Bank of India | Udaipur Main | UBIN0531014 | 310102050000148 |

**संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।**


मन के जीते जीत सदा ( दैनिक समाचार-पत्र ) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर ( राज. ) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर ( राज. ) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023